इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र
पूर्वक्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी
कलाकोश प्रभाग के २४वीं स्थापना दिवस समारोह

विगत ३ जुलाई २०१२ गुरुपूर्णिमा के पावन अवसर पर इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, पूर्वक्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी के परिस्पन्दस्थित कार्यालय के सभागार में सायंकाल को २.३० बजे कलाकोश प्रभाग के २४वीं स्थापना दिवस आडम्बर के साथ सम्पन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में एक विशेष व्याख्यान आयोजित था, जिसमें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग, कला संकाय के पूर्व अध्यक्ष प्रो० विश्वनाथ भट्टाचार्य को व्याख्यान देने के लिए आमन्त्रित किया गया था। उन्होंने ''**मेघदूत सन्दर्भ में कालिदास की अनोखी कविकल्पना**'' विषय पर एक सारगर्भित एवं वर्णाढ्य व्याख्यान प्रस्तुत किया। सभा की अध्यक्षता परामर्शदाता प्रो० कमलेश दत्त त्रिपाठी ने की। सभा में उपस्थित अन्य विद्वज्जनों का विवरण निम्नरूप है –

प्रो० रेवाप्रसाद द्विवेदी
प्रो० उपेन्द्र पाण्डेय
डॉ० सुकुमार चट्टोपाध्याय
डॉ० सदाशिव कुमार द्विवेदी
डॉ० सर्वज्ञ द्विवेदी
डॉ० नरेन्द्र दत्त तिवारी
डॉ० रमा दूबे
डॉ० त्रिलोचन प्रधान
डॉ० रजनी कान्त त्रिपाठी
श्री अम्बुज त्रिवेदी
श्री चतुर्भुज दास
श्री संजय सिंह
श्री गौतम चटर्जी
श्री प्रदीप चटर्जी
डॉ० प्रणति घोषाल एवं संस्थाके अन्य सदस्यगण।

अनुष्ठान का शुभारम्भ डॉ० नरेन्द्र दत्त तिवारी के वेदपाठ से हुआ इसके पश्चात् संस्थाके परामर्शदााता प्रो० कमलेश दत्त त्रिपाठी ने अपने संक्षिप्त भाषण में विद्वान् वक्ता को उपस्थित विद्वन्मण्डली में परिचित कराया तथा विषय प्रवर्तन किया।

तत्पश्चात् प्रो० भट्टाचार्य ने अघटनघटनपटीयसी कल्पना के अधिकारी कालिदास की स्तुति स्वरचित चतुर्दशपदी कविता से किया, एवं मेघदूत खण्डकाव्य के सामान्य परिचय देते हुए उन्होंने बताया मन्दाक्रान्ता छन्द में विरचित यह काव्य ११२ श्लोकों में सीमित है। संस्कृत साहित्य में दूतकाव्य रचना के अग्रणी कादिलास ही थे यद्यपि परवर्तीकाल में हनुमद्दूत, हंसदूत, पवनदूत, शंखदूत आदि बहुविध नाम मिलते हैं। इस काव्य के आरम्भ में ही रामगिरि आश्रम एवं रघुपतिपदलांछित कैलासपर्वत के उल्लेख से प्रतीत होता है मेघदूत काव्य रामायण पर आधारित है और उत्तरमेघ के (२/४०) '' इत्याख्याते पवनतनयं मैथिलीवोन्मुखी सा.....

इत्यादि श्लोक से प्रतीत होता है कि महाकवि को रामायण का सीता के हनुमत्संदेश से मेघदूत रचना की प्रेरणा मिली। कालिदास के सभी काव्य नाटकों में दु:खवेदना का एक गुरुत्वपूर्ण स्थान है एवं दु:खवेदना के विशिष्ट अधिकारी, चिरकालीन विरहवेदना के प्रतिनिधि, मेघदूत के नायक कर्तव्य भ्रष्ट अभिशप्त यक्ष वर्षकाल के लिये दूर धरातल में निवास कर रहे , अभिशाप के आठ महीना वीत जाने के वाद वर्षारम्भ नवीन मेघोदय देखके यक्ष विषण्ण हो जाते हैं। कारण '' **मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्यथावृत्तिचेत:**'' सुखी व्यक्ति ही जब मेघदर्शन से अन्यथावृत्तिचेता होते हैं, तो दीर्घकाल से अलकापुरी से दूरस्थित यक्ष को विषण्ण होना स्वाभाविक है। फिर भी मेघदर्शन से वह उल्लसित भी है, जैसे अगाध जलधि में डूबते हुए व्यक्ति तृणखण्ड का सहारा लेकर जीवनरक्षा करना चाहता है उसी प्रकार स्वतन्त्रवृत्ति वादल कहीं भी जा सकता है, उसे अपना दूत बनाकर अपनी प्रिया के पास समाचार भेजने की योजना वनाते हैं और बहुत स्तुति–विनति करके जड वादल से ही सहायता की प्रार्थना करते हैं कारण ''**कामार्ता ही प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु**''। अर्थात् विरहकातर जन चेतन और अचेतन प्रकृति का अन्तर देख नहीं पाते। इसके पश्चात् वादल को अलकापुरी जाने का मार्ग निर्देश करते हैं। यद्यपि रामगिरि से कैलास की ओर जाने में सीधे मार्ग में उज्जयिनी नही आती फिर भी उज्जयिनी विना देखे चले जाने से यात्रा अधूरी रह जायेगी। सन्ध्याकाल में महाकालकी आरति के समय मेघडम्बर करने का अनुरोध भी किया, ऐसे यात्रामार्ग की वर्णन करते हुए यक्ष मध्यभारत के विभिन्न स्थानों की वर्णाढ्य विवरण दिये।

इसी प्रकार अन्यान्य प्रकार से अलकापुरी का वर्णन करते हुए अन्त में कवि कहता है कि माँगे जाने पर तुम मौन रह कर ही चातकों को जल देते हो क्योंकि याचकों के अभिलषित कार्य का संपादन ही सज्जनों का उत्तर हुआ करता है। इस विचार से मेरे उपर दया की भावना से अनुचित प्रार्थना करने वाले मेरे इस प्रिय कार्य को करके वर्षा ऋतु के कारण अतिशय शोभा से सम्पन्न होते हुए अपने मनचाहे देशों मे विचरण करना और क्षण भर भी विद्युत् से तुम्हारा मेरे जैसा वियोग न हो।

इस प्रकार दोनो खण्डों में विभक्त मेघदूत का पूर्वमेघ में नायक यक्ष का मेघ के द्वारा अपनी प्रिया के लिए सन्देश प्रेषण एवं उत्तरमेघ में कवि की अपनी वाणी से अलकापुरी का शोभातिशायी वर्णन मिलता है। प्रो० भट्टाचार्य की विवरण के अनुसार महाकवि कालिदास चिरकालीन विरह के प्रतिनिधि यक्ष की विरहवेदना को चिरन्तन सौन्दर्य के पुट देकर प्रस्तुत किये जहाँ शृङ्गार भी एक अनुपम कोटि पर पहूँच गया।

व्याख्यान के उपरान्त प्रो० रेवाप्रसाद द्विवेदी अपनी टिप्पणी में विविध पक्ष पर प्रकाश डाला। अन्त में प्रो० त्रिपाठी के अध्यक्षीय भाषण एवं धन्यवाद ज्ञापन के साथ अनुष्ठान की समाप्ति हुई।

डॉ० रजनी कान्त त्रिपाठी